PAHALWAN GURUDEEN PRASIKSHAN MAHAVIDYALAYA

PANARI, LALITPUR (U.P.)

JOURNAL PAPER (DRISHTIKON)

TITLE – Organic Farming New Basis of Sustainable Agricultural Development in Hamirpur

DR. SATYAM DWEVIDI

ISSN NO. 0975-119X

EDUINDEX

PUBLICATION CERTIFICATE

This publication certificate has been issued to

सत्यम् द्विवेदी

For publication of research paper titled

हमीरपुर में सतत् कृषि विकास के नये आधार जैविक खेती : एक भौगोलिक विश्लेषण

Published in

Drishtikon with ISSN 0975-119X

Vol: *12* **issue:** *9* **Month:** *June* **Year:** *2020*

Impact factor: *5.6*

The journal is indexed, peer reviewed and listed in UGC Care

Editor

Editor

www.eduindex.org
editor@eduindex.org

Note: This eCertificate is valid with published papers and the paper must be available online at the website under the network of EDUindex.

Drishtikon
(UGC Care Journal)

ISSN 0975-119X
Vol-12-Issue-09
June-2020

हमीरपुर में सतत् कृशि विकास के नये आधार जैविक खेतीः एक भौगोलिक विश्लेशण

शोधार्थीः सत्यम् द्विवेदी

शोधसारः हमीरपुर उत्तर प्रदे"ा राज्य के बुन्देलखण्ड क्षेत्र का कृषि प्रधान जिला है। यहां पर खरीफ रबी फसलों का उत्पादन किया जाता है। यह जनपद बुन्देलखण्ड के पठारी क्षेत्र के अन्तर्गत आता है। यहां पर वर्षा की कमी तथा कृषि संसाधनों के अभाव के कारण यह जनपद हमे"ा से ही कृषि क्षेत्र में पीछे रहा है। परन्तु समय के साथ ही यहां पर कई परिवर्तन हुए है। जिनमें एंक परिवर्तन [जैविक कृषि] की ओर लोगो का आकर्षण है एवं अनाज की पैदावार को बढाने के लिए रासायनिक खादों का उपयोग करके उत्पादन को बढ़ाने में ध्यान केन्द्रित किया गया है। जिससे उत्पादन तो बढ़ा परंतु मिट्टी की उर्वरक क्षमता धीरे–धीरे नष्ट होने लगी इसलिए आज के समय में हमीरपुर की नही अपितु सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड क्षेत्र में जैविक खेती करना जरूरी हो गया है। जैविक खेती से कई तरह की बीमारियां तो नष्ट होती है बल्कि प्रदूषण से भी मुक्ति मिलती है। जैविक खेती के कारण भूमि की उपजाऊ क्षमता बढ जाती है तथा जैविक कृषि अपनाने से कम मात्रा में सिंचाई की आव"यकता पड़ती है क्योंकि जैविक खेती करने से मृदा में नमी बनी रहती है। जैविक खेती का उपयोग करने से खेतों की परिस्थितिकी उत्पादकता बनी रहती है और फसल चक्र प्रभावित नही होता है तथा किसान जैविक खेती से अपनी भूमि को बंजर होने से बचाता है क्योंकि रासायनिक खेती करने से मिट्टी कम उपजाऊ वाली हो जाती है। जब कोई किसान प्राकृतिक तरीके से जैविक खेती करता है तब उसको काफी लाभ होता है क्योंकि आज के समय बाजार में जैविक खेती से प्राप्त अनाज की मांग बहुत है क्योंकि रासायनिक तरीके से की गयी खेती से प्राप्त अनाज से कई प्रकार की बीमारियां फैल रही है। यदि किसान जैविक खेती करके अपना उत्पादन बढ़ाए तो वह जैविक खेती के माध्यम से काफी लाभ प्राप्त कर सकता है। उपर्युक्त जैविक खेती की उपयोगिता को देखते हुए हमीरपुर जनपद के किसान जैविक खेती करने के लिए अग्रसर हुए है।

परिचयः–

सम्पूर्ण उत्तर प्रदे"ा के साथ–साथ दे"ा में बढती हुई जनसंख्या के साथ भोजन की आपूर्ति के लिए मानव द्वारा खाद्य उत्पादन की होड़ में अधिक से अधिक उत्पादन प्राप्त करने के लिए तरह–तरह की रासायनिक खादो जहरीले कीटना"ाकों का उपयोग परिस्थितिकी तंत्र को प्रभावित करता है। जिससे भूमि की उर्वरक शक्ति खराब हो जाती है साथ ही वातावरण प्रदूषित हो जाता है तथा मानव के स्वास्थ्य में गिरावट आती

Copyright©authors

ISSN 0975-119X
Vol-12-Issue-09
June-2020

है। प्राचीन काल में मानव स्वास्थ्य के अनुकूल तथा प्राकृतिक वातावरण के अनुरूप खेती की जाती थी जिससे जैविक और अजैविक पदार्थो के बीच आदान प्रदान का चक्र निरंतर चलता रहा था जिसके फलस्वरूप जल, भूमि, वायु तथा वातावरण प्रदूषित नही होता था। प्राचीन काल में कृषि एवं प"ुपालन संयुक्त रूप से किया जाता था जो कि प्राणी व वातावरण के लिए अत्यंत उपयोगी था। परन्तु बदलते परिवे"ा में प"ुपालन धीरे–धीरे रासायनिक खादों व कीटना"कों प्रयोग हो रहा है। जिसके फलस्वरूप जैविक और अजैविक पदार्थो के चक्र का संतुलन बिगड़ता जा रहा है और वातावरण प्रदूषित होकर मानव जाति के स्वास्थ्य को प्रभावित कर रहा है। हमीरपुर में ग्रामीण अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि है और कृषकों की मुख्य आय का साधन खेती है। हरित क्रान्ति के समय से बढ़ती हुई जनसंख्या को देखते हुए एवं आय की दृष्टि से उत्पादन बढ़ाना आव"यक है। अधिक उत्पादन के लिए खेती में अधिक मात्रा में रासायनिक उर्वरकों का उपयोग करना पड़ता है जिससे सीमान्त व छोटे कृषक के पास कम जोत में अत्याधिक लागत लग रही है और जल, भूमि, वायु और वातावरण की प्रदूषित हो रहा है साथ ही खाद्य पदार्थ भी जहरीले हो रहे है। इसलिए इस प्रकार की उपर्युक्त समस्याओं से निपटाने के लिए गत वर्षो से हमीरपुर में (सतत कृषि विकास के सिद्धान्त पर जैविक खेती करने का बढ़ावा दिया जा रहा है)।

अध्ययन का उद्देश्य:–

"अध्ययन का उद्दे"य में सतत कृषि विकास के लिए जैविक खेती के प्रभावों का वि"लेषण करना है। इस प्रकार शोधकार्य का निम्नलिखित उद्दे"य है–

1. रासायनिक उर्वरक का कम से कम उपयोग हो।
2. जैविक खादों का उपयोग अधिक हो।
3. फसल चक्र में दलहनी फसलों को प्राथमिकता दी जाये।
4. मृदा संरक्षण क्रियाओं को अपनाया जाये।
5. इससे किसानों को फसल उत्पादन लागत कम हो तथा आय में वृद्धि होती है।
6. अधिक उत्पादन करने के लिए नये आधारों को अपनाना।

परिकल्पना :–

"वर्तमान अध्ययन निम्न परिकल्पना पर आधारित है।"

1. हमीरपुर में कृषकों की रूचि जैविक खेती की ओर बढ़ा है।
2. हमीरपुर में जैविक खेती से मृदा गुणवत्ता में सुधार हुआ है।
3. हमीरपुर में जैविक खेती अपनाने से मिट्टी की जल धारण क्षमता में बढोतरी हुई है।

अध्ययन क्षेत्र:–

हमीरपुर उत्तर प्रदे"ा के बुन्देलखण्ड क्षेत्र का एक जिला है। जिसका मुख्यालय हमीरपुर ही है। यह जिला चित्रकूट मण्डल (प्रभाग) के अन्तर्गत आता है। हमीरपुर शहर यमुना और बेतवा नदियों के संगम पर बसा है। हमीरपुर जिला अक्षां"ा 25.79'13 डिग्री उत्तर और दे"ान्तर 80.0088 डिग्री पूर्व के बीच है। हमीरपुर जिला 4,121'9 किमी^{2} के क्षेत्र में स्थित है। जिले की आबादी 10,42,374 (2011 की जनगणना) है। इस जिले के उत्तर में कानपुर नगर तथा कानपुर देहात जनपद तथा पूर्व में फतेहपुर और बांदा जिले है एवं दक्षिण में महोबा और प"िचममें जालौन एवं झांसी जिले स्थित है।

ISSN 0975-119X
Vol-12-Issue-09
June-2020

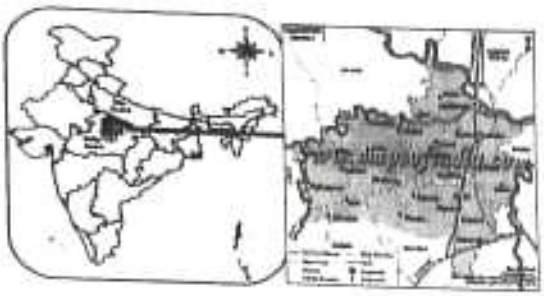

यह जनपद बुन्देलखण्ड के पठारी क्षेत्र में सम्मिलित है। इस जिले में चार तहसीले और सात विकास खण्ड क्षेत्र सम्मिलित है। यह जनपद राजधानी लखनऊ से (149 किमी.) दूर उत्तर प्रदे"ा के दक्षिण भाग पर स्थित है। हमीरपुर में कृषकों की मुख्य आय का स्रोत कृषि है। वर्तमान समय में हमीरपुर ही नही अपितु सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड में सतत कृषि के लिए जैविक खेती पर बहुत ज्यादा ध्यान दिया जा रहा है। भूमि की उर्वरक शक्ति को बनाए रखने के लिए फसल चक्र हरी खाद आदि का प्रयोग किया जाता है। यह खेती रासायन मुक्त है। जिसमें सूक्ष्म जीवों का उपयोग पौधों के उचित विकास तथा उत्पादन में वृद्धि हेतू किया गया है। यह मूल रूप से वैज्ञानिक सिद्धान्तों तथा परम्पराओं पर आधारित है। जैविक खेती में रासायन कीटना"ाकों की मनाही है क्योंकि इसका मुख्य उद्दे"य मृदा क उर्वरता में सुधार कर परिस्थितिक तंत्र को बनाये रखना है। इसे शुरू करने से पूर्व मिट्टी का परीक्षण कर पोषक तत्वों की आव"यकता तथा अधिकता का पता लगाया जाता है।

पौधे से पौधे की उचित दूरी, सिंचाई की उचित अवधि तथा आदृत्ति मिश्रित फसल आदि का ध्यान रखा जाता है। कृत्रिम उर्वरकों, कीटना"ाक, खरपतवारों के बजाय हरी खाद के चुआ, पंचगव्य, रसोई का कचरा, गोबर, नीम की पत्तियों का कचरा आदि अन्य कबिनिक पदार्थो के उपयोग को प्राथमिकता दिया जाता है।

जैविक खेती की महत्ताः–

जैविक खेती की विधि रासायनिक खेती की विधि की तुलना में बराबर या अधिक उत्पादन देती है अर्थात जैविक खेती मृदा की उर्वरता एवं कृषकों की उत्पादकता बढ़ाने में पूर्णतः सहायक है। वर्षा आधारित क्षेत्रों में जैविक खेती की विधि और भी अधिक लाभदायक है जैविक विधि द्वारा खेती करने से उत्पादन की लागत कम होती है। इसके साथ कृषकों को आय अधिक प्राप्त होती है तथा अन्तराष्ट्रीय बाजार की स्पर्धा में जैविक उत्पाद अधिक खरे उतरते है। उपर्युक्त तथ्यों को ध्यान रखते हुए हमीरपुर के कृषक जैविक खेती की और अग्रसर हुए है।

जैविक खेती से हुए लाभः–

हमीरपुर जनपद में जैविक खेती से निम्नलिखित लाभ प्रदा"ित हुए है।

1. भूमि उपजाऊ क्षमता में वृद्धि।
2. सिंचाई अंतराल में वृद्धि हुई है।
3. फसलों की उत्पादकता में वृद्धि।
4. भूमि गुणवत्ता में सुधार।
5. भूमि जल धारण क्षमता में बढोत्तरी।

Copyright©authors

ISSN 0975-119X
Vol-12-Issue-09
June-2020

6. मृदा खाद्य पदार्थों और जमीन में पानी के माध्यम से होने वाले प्रदूषण में कमी।
7. फसल उत्पादन लागत में कमी एवं आय में वृद्धि।

जैविक खेती हेतु प्रमुख जैविक खाद दवाईयां:–

हमीरपुर जिले में जैविक खेती के निम्नलिखित जैव खाद एवं दवाइयों का उपयोग किया जा रहा है।

1. नाडेप खाद।
2. जैव उर्वरक।
3. केंचुआ खाद।
4. एजोटोवैक्टर, एजोस्पिरिल्लूम, हिजैवियम आदि।

निकर्ष:–

भारत को परम्परागत धरती पोषण की नीति को अपनाकर गोबर, गोमूत्र, पत्ते की पौष्टिक खाद और जैव उर्वरकों के प्रयोग पर बल देना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. गौतम अलका (2009) कृषि भूगोल; शारदा पुस्तक भवन पब्लि"र्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, इलाहाबाद पृष्ठ संख्या 122.
2. मिश्रा आ.पी. (1986) एग्रीकल्चरल ज्योग्राफी, हेरिटेज पब्लि"र्स, नई दिल्ली पृ. 182–184.
3. सिंह बी.बी. (1979) एग्रीकल्चरस ज्योग्राफी तारा पब्लिके"न वाराणसी पृ. 62.
4. www.shodhganga.ac.in

Copyright©authors